CERTIFICATE

I certify that the thesis entitled **HINDI FILMON MEIN CHIITRIT QUEER KA JEEVAN SANGHARSH EVAM SAMASYAYEN: EK ADHYAYAN** submitted for the degree of Doctor of Philosophy **(Ph.D) by Abhirami C J** is the record of research work carried out by her during the period from 2021-2025 under my guidance and supervision, and the work has not formed the basis for the award of any Degree, Diploma, Associateship, Fellowship, or other Titles in this University or other Institution of Higher Learning.

22-01-2025

Signature of the HoD

22-01-2025

Signature of Supervisor

22-01-2025

Signature of Dean

School of Arts and Social Sciences

DECLARATION

I declare that the thesis entitled **HINDI FILMON MEIN CHITRIT QUEER KA JEEVAN SANGHARSH EVAM SAMASYAYEN : EK ADHYAYAN** submitted by me for the degree of Doctor of Philosophy **(Ph.D.)** is the record of work carried out by me during the period from 2021 to 2025 under the guidance of **Dr. Shobhana Kokkadan,** Professor, Head of the Department of Hindi & Dean of Arts and Social Sciences and has not formed the basis for the award of any Degree, Diploma, Associateship, Fellowship, Titles in this University or any other University or other similar Institution of Higher Learning.

Signature of the Candidate

आभार प्रदर्शन

प्रस्तुत शोध प्रबंध की पूर्णता में सहयोग प्रदान करने वाले सभी महानुभावों एवं आत्मीय जनों के प्रति मैं अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करना अपना कर्तव्य मानती हूँ । सर्वप्रथम, मैं ईश्वर का हृदय से धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने मुझे अपार आशीर्वादों से समृद्ध किया और सभी बाधाओं को पार करते हुए अध्ययन को सफलतापूर्वक पूर्ण करने का मार्ग प्रशस्त किया । मैं अपनी गहन कृतज्ञता डॉ. टी.एस. अविनाशीलिंगम अय्या अवरुगल, संस्थापक और प्रथम कुलाधिपति, डॉ. राजम्मल पी. देवदास अम्मा अवरुगल, अविनाशीलिंगम इंस्टीट्यूट फॉर होम साइन्स एंड हायर एजुकेशन फॉर वुमन, कोयम्बत्तूर, के प्रति व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने इस महान शिक्षा मंदिर की स्थापना की और मुझे इस अवसर का लाभ उठाने का सौभाग्य प्रदान किया ।

अविनाशिलिंगम इनस्टिट्यूट फॉर होम साइन्स एंड हायर एजुकेशन फॉर वुमन, कोयम्बत्तूर के माननीय पूर्व कुलाधिपति महोदय टी एस पी त्यागराजन जी, वर्तमान कुलाधिपति महोदय डॉ. टी. एस. के मीनाक्षी सुंदरम, पूर्व कुलपति महोदया डॉ प्रेमावती विजयन, वर्तमान कुलपति महोदया डॉ. वी. भारती हरिशंकर, पूर्व कुलसचिव डॉ एस कौसल्या, वर्तमान कुलसचिव (प्रभारी) महोदया डॉ. एच. इन्दु के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होनें मुझे हिन्दी विभाग में पी.एच.डी प्रवेश दिलाते हुए इस शोध कार्य करने का सुअवसर प्रदान किया ।

मैं हमारे पूर्व परीक्षा नियंत्रक (प्रभारी) महोदया डॉ. के. मणिमोली और वर्तमान परीक्षा नियंत्रक (प्रभारी) डॉ. के. संपत्त रानी के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोध प्रबंध को पूरा करने में प्रोत्साहन दिया । मैं हमारे अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ के निर्देशक महोदया डॉ. पी. ललिता के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझे कई प्रकार के सुझाव एवं सहायता प्रदान की ।

प्रस्तुत शोध का कार्यान्वयन संकायाध्यक्षा, विभागाध्यक्षा एवं शोध निर्देशिका महोदया डॉ. शोभना कोक्काडन के विद्वत्तापूर्ण दिशा-निर्देशन एवं प्रोत्साहन में सम्पन्न हुआ है । मेरे इस अध्ययन का सम्पूर्ण श्रेय मैं अपने गुरुवर्य डॉ. शोभना कोक्काडन जी को देती हूँ । आपके मार्ग दर्शन, सुझाव, सहयोग, प्रेरणा एवं स्नेह के लिए मैं तहे दिल से कृतज्ञ एवं आभारी रहूँगी ।

मैं डॉक्टरल कमिटी के विषय विशेषज्ञ डॉ. प्रमोद कोव्वप्रथ, प्रोफसर, हिन्दी विभाग, कालिकट् विश्वविद्यालय और श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की प्रोफेसर डॉ. शांति नायर के प्रति भी अपनी कृतज्ञता अर्पित करती हूँ जिन्होंने समय-समय पर शोध विषय संबंधी दिशा-निर्देशन में मेरी सहायता की ।

हिंदी विभाग की प्रोफेसर डॉ. शशिप्रभा जैन और प्रोफेसर जी. शांति के प्रति मैं अपना विनम्र आभार प्रकट करती हूँ, जिनका आशीर्वाद सदा मुझ पर बना रहा । शुक्रगुज़ार हुँ अविनाशिलिंगम इंस्टिट्यूट फॉर होम साइन्स एण्ड हायर एजुकेशन फॉर वुमन, कोयम्बत्तूर, कोच्चीन विश्वविद्यालय, केरल विश्वविद्यालय, कालिकट्ट विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग (कार्यवट्टम) के पुस्तकालय तथा दोस्तों के प्रति जिन्होंने व्यस्तता के बावजूद भी मेरे इस- अध्ययन- अन्वेषण को पूर्णता देने में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ आदा की।

मुझे इस मंजिल तक पहुँचाने में मेरे माता-पिता के योगदान अमूल्य रहा है। उनकी प्रार्थना, प्रोत्साहन एवं शुभाशीषा हमेशा मुझमें एक नयी ऊर्जा एवं उमंग प्रदान की। प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप में जिनसे मुझे सहयोग प्राप्त हुआ उन सभी के प्रति मैं शुक्रगुजार हूँ । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में कहीं त्रुटियाँ या कमियाँ आ गई है तो उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ । क्वीर विषय के प्रति रुचि रखने वाले अध्येताओं एवं अनुसन्धाताओं को प्रस्तुत शोध प्रबन्ध से फायदा मिलेगा तो मैं अपने आपको धन्य मानूँगी ।

सविनय एवं सधन्यवाद

अभिरामी सी जे

प्राक्कथन

साहित्य और समाज का संबंध अन्योन्याश्रित है । समाज के बिना साहित्य की निर्मिति नहीं कर सकते और बिना साहित्य के समाज भी अपना कोई महत्त्व नहीं रखता । जिस तरह साहित्य और समाज का संबंध अभिन्न है ठीक वैसे ही साहित्य और सिनेमा का भी अटूट रिश्ता रहा है । साहित्य समाज को प्रतिबिंबित करता है, जो उसकी संवेदनाओं, विचारों और प्रवृत्तियों को उजागर करता है, और सिनेमा इसी साहित्य को दृश्य माध्यम में बदलकर विश्वभर के दर्शकों तक पहुँचाता है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि शिक्षा, जागरूकता और सामाजिक परिवर्तन का शक्तिशाली उपकरण है । फिल्में समाज की सच्चाइयों को उजागर करते हुए उसे सोचने, समझने और बदलने की प्रेरणा देती हैं। साहित्य और सिनेमा का संगम दर्शकों को उन कहानियों और मुद्दों से जोड़ता है, जो समाज के हर वर्ग को छूते हैं।

साहित्य ने सदैव समाज के अनछुए पहलुओं को सामने लाने और उन्हें विस्तार देने का काम किया है। सिनेमा ने इस प्रयास को जीवन देते हुए व्यक्तियों, वर्गों और समुदायों की कहानियों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। यह माध्यम न केवल संवेदनाओं और अनुभवों को चित्रित करता है, बल्कि उन प्रश्नों और विचारों को भी सामने लाता है जो अक्सर अनदेखे रह जाते हैं। हाशिए पर खड़े वर्गों की आवाज़ बनते हुए, सिनेमा ने उनकी परंपराओं, सांस्कृतिक विविधताओं और समस्याओं को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने में मदद की है। इसके साथ ही, यह माध्यम समाज में व्याप्त रूढ़ियों को चुनौती देकर परिवर्तन और प्रगतिशीलता की दिशा में एक मजबूत भूमिका निभाता है। साहित्य और सिनेमा के इस तालमेल ने समाज को एक जीवन्त दृष्टिकोण प्रदान किया है।

नब्बे के दशक के बाद भारत में हाशिए के विमर्शों की चर्चा ने एक नई दिशा प्राप्त की । इसमें दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, पर्यावरण विमर्श,

दिव्यांग विमर्श, बाल विमर्श, वृद्ध विमर्श के साथ-साथ एल जी बी टी क्यू (LGBTQ) या क्वीर विमर्श/सिद्धांत प्रमुखता से उभरे । इन विमर्शों ने समाज में उपेक्षित और हाशिए पर खड़े समुदायों की आवाज को स्थान दिया और उनकी अस्मिता, अधिकारों और अस्तित्व को नई पहचान प्रदान की ।

क्वीर सिद्धांत उत्तर-संरचनावादी सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसका उद्भव 1990 के दशक में क्वीयर अध्ययन तथा स्त्री अध्ययन के क्षेत्र में हुआ है । 'क्वीर' एक ऐसा व्यापक शब्द है, जो उन सभी व्यक्तियों को सम्मिलित करता है जो 'विषमलैंगिकता' और 'सिसजेंडर' की पारंपरिक परिभाषाओं से भिन्न हैं । यह उन लोगों की पहचान को संदर्भित करता है जिनकी 'लैंगिक पहचान' पारंपरिक स्त्री-पुरुष की धारणाओं से परे है, या जिनकी 'यौनिकता' समाज द्वारा स्वीकृत रूढ़िगत मानकों के अनुरूप नहीं है ।

छोटी उम्र से ही मुझे विभिन्न शैलियों (जॉनर) की फ़िल्में देखने का शौक रहा है, और इसी दौरान मेरी नज़र एल जी बी टी थीम पर आधारित फ़िल्मों पर पड़ी, जिन्होंने इस क्षेत्र में मेरी रुचि को जागृत किया । इन फ़िल्मों ने न केवल मेरे भीतर इस समुदाय के जीवन के प्रति जिज्ञासा बढ़ाई, बल्कि उनके सामने आने वाली चुनौतियों और संघर्षों को समझने की प्रेरणा भी दी । इसी अनुभव ने मुझे 'हिन्दी फिल्मों में चित्रित क्वीर का जीवन संघर्ष एवं समस्याएँ: एक अध्ययन' विषय को शोध के रूप में चुनने के लिए प्रेरित किया । समाज में क्वीर समुदाय के प्रति व्याप्त भेदभाव, अस्वीकृति, कानूनी भेदभाव, आर्थिक और सामाजिक अलगाव, शैक्षणिक संस्थानों में उत्पीड़न और मीडिया में नकारात्मक चित्रण जैसे पहलुओं ने मेरे विचारों को गहराई से प्रभावित किया । क्वीर समुदाय के संघर्षों का मज़ाक उड़ाने या उन्हें और अधिक हाशिए पर धकेलने के बजाय, मुझे एहसास हुआ कि एल जी बी टी क्यु समुदाय की वास्तविकताओं को पहचानना और गहराई से समझना अधिक वांछनीय और महत्वपूर्ण है । इस शोध का उद्देश्य हिन्दी

सिनेमा के माध्यम से क्वीर समुदाय के जीवन और संघर्षों को उजागर करना और समाज में समानता एवं जागरूकता को बढ़ावा देना है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में बाँटा गया है-

अध्याय-१ क्वीर : अवधारणा एवं स्वरूप

अध्याय-२ हिन्दी फिल्मों में चित्रित 'लेस्बियन'- संघर्ष एवं समस्याएँ

अध्याय-३ हिन्दी फिल्मों में चित्रित 'गे'- संघर्ष एवं समस्याएँ

अध्याय-४ हिन्दी फिल्मों में निरूपित 'थर्ड जेंडर'-संघर्ष एवं समस्याएँ

अध्याय-५ हिन्दी फिल्मों में क्वीर: अभिव्यक्ति पक्ष

प्रथम अध्याय 'क्वीर : अवधारणा एवं स्वरूप' में 'क्वीर' शब्द और समुदाय का संक्षिप्त परिचय, विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं पर चर्चा की गई है। उप-शीर्षक के अंतर्गत लैंगिक अवधारणा, क्वीर-उद्भव एवं इतिहास, क्वीर-प्रकार, क्वीर- धर्म संबंधी मान्यताएँ, हिन्दी साहित्य में क्वीर विमर्श पर अध्ययन किया गया है ।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है 'हिन्दी फिल्मों में चित्रित 'लेस्बियन'-संघर्ष एवं समस्याएँ'। इस अध्याय को तीन उप- शीर्षकों में विभाजित करके इसको क्रमशः हिंदी सिनेमा का संक्षिप्त परिचय, शोध के लिए चयनित हिन्दी फिल्मों में चित्रित लेस्बीयन फिल्मों की सूची एवं कथानक को प्रस्तुत करके इन्हें सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पितृसत्तात्मक, राजनैतिक, धार्मिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर उनके संघर्ष एवं समस्याओं का विश्लेष्णात्मक अध्ययन किया गया है ।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है 'हिन्दी फिल्मों में चित्रित 'गे'- संघर्ष एवं समस्याएँ'। इस अध्याय को तीन उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है । इसमें 'गे' शब्द के उद्भव और विकास पर चर्चा की गई है । साथ ही, गे मुद्दों पर बनी हिन्दी फिल्मों के कथानक को अध्ययन का हिस्सा बनाते हुए, उनके सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पितृसत्तात्मक,

राजनैतिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर विश्लेषण किया गया है । इस विश्लेषण के माध्यम से उनके अनुभवों और न्यायसंगत अधिकारों का विचारात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय 'हिन्दी फिल्मों में निरूपित 'थर्ड जेंडर' - संघर्ष एवं समस्याएँ' शीर्षक के अंतर्गत भारतीय सिनेमा में थर्ड जेंडर (हिजड़ा/किन्नर समुदाय) के चित्रण और उनके जीवन संघर्षों को गहराई से समझने का प्रयास किया है । प्रस्तुत अध्याय को तीन उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिसमें थर्ड जेंडर के जीवन, समाज में उनकी स्थिति और उनके संघर्षों का विभिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषण किया गया है । इस अध्याय में हिन्दी सिनेमा में थर्ड जेंडर के ऐतिहासिक और समकालीन चित्रण को स्पष्ट करते हुए शोध के लिए चयनित फिल्मों के माध्यम से उनके जीवन और संघर्षों की ओर इशारा किया गया है । इन फिल्मों के कथानक सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और पारिवारिक संदर्भों के आधार पर विश्लेषण किया गया है ।

पंचम अध्याय का शीर्षक 'हिन्दी फिल्मों में क्वीर: अभिव्यक्ति पक्ष' है । इस अध्याय में फिल्म का अर्थ, परिभाषा, भाषा और प्रस्तुतीकरण पर विस्तार से चर्चा की गई है । फिल्म की कला और तकनीकी पक्षों का विश्लेषण करते हुए पटकथा, संवाद, अभिनय, भाषा, संगीत, छायांकन, दृश्य योजना और संपादन का अवलोकन किया गया है ।

'उपसंहार' में निष्कर्ष के तौर पर समूचे अध्ययन का सार प्रस्तुत किया गया है । शोध प्रबंध में 'हिन्दी फिल्मों में चित्रित क्वीर का जीवन संघर्ष एवं समस्याएँ' के संदर्भ में जिन आयामों को खोजा गया है, उनका विवेचन है और शोध प्रबंध का समापन आधार ग्रन्थ सूची, शब्द कोश एवं पत्र-पत्रिकाओं, वेबसाइट के विवरण के साथ प्रस्तुत किया गया है ।